



शायरा मेरा प्यार- 1

“बारहवीं के बाद मैंने दिल्ली के कॉलेज में प्रवेश लिया, किराये के कमरे में रहने लगा. दिल्ली में मेरी जिन्दगी की शुरुआत कैसे हुई ? मेरी कहानी पढ़ कर जानें. ...”

Story By: mahesh kumar (maheshkumar_chutpharr)

Posted: Friday, October 30th, 2020

Categories: [हिंदी सेक्स स्टोरी](#)

Online version: [शायरा मेरा प्यार- 1](#)

शायरा मेरा प्यार- 1

❓ यह कहानी सुनें

बारहवीं के बाद मैंने दिल्ली के कॉलेज में प्रवेश लिया, किराये के कमरे में रहने लगा. दिल्ली में मेरी जिन्दगी की शुरुआत कैसे हुई ? मेरी कहानी पढ़ कर जानें.

नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम महेश कुमार है और मैं एक सरकारी नौकरी करता हूँ.

इससे पहले आपने मेरी पिछली सेक्स कहानी

खामोशी : द साईलैन्ट लव

को पढ़ा और उसको हृद से ज्यादा पसन्द किया, उसके लिए आप सभी का धन्यवाद.

मैं अब उसके आगे की एक नयी सेक्स कहानी लिख रहा हूँ, उम्मीद है कि ये सेक्स कहानी भी आपको पसन्द आएगी.

इस प्रेम कहानी शुरू करने से पहले अपनी हर एक सेक्स कहानी की तरह ही मैं इस बार भी वही दोहरा रहा हूँ कि मेरी सभी कहानियां काल्पनिक होती हैं. इनका किसी के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है, अगर होता भी है ... तो मात्र ये एक संयोग ही होगा.

जैसा कि आपने मेरी पिछली कहानी में पढ़ा था कि बारहवीं कक्षा में कम अंक आने के कारण मुझे कहीं भी दाखिला नहीं मिल रहा था. ऊपर से भैया की पिटाई से मेरा पैर भी टूट गया था, जिससे मैंने कहीं भी दाखिला नहीं लिया था. इस वजह से मेरा वो पूरा साल ही खराब हो गया था.

अगले साल भी मेरी वही हालत थी.

मुझे सामान्य कॉलेज में तो दाखिला मिल रहा था, मगर कम अंक होने के कारण जिस

कॉलेज में मेरे भैया चाहते थे, उसमें दाखिला नहीं मिल रहा था.

पर भैया ने कैसे भी जुगाड़ लगाकर मेरा दाखिला दिल्ली के एक कॉलेज में करवा ही दिया.

ये जुगाड़ कुछ हेनू हेनू जैसा था. दरअसल उस कॉलेज में ममता जी पढ़ाती थीं, उन्हीं की सिफारिश से मेरा दाखिला उस कॉलेज में हुआ था.

अगर आपने मेरी पहले की कहानी

बस से बिस्तर तक का सफर

पढ़ी होगी, तो आप ममता जी को जरूर जानते होंगे.

जी हां ... ममता मेरी भाभी की बुआ की लड़की थीं. जिनके साथ मेरे शारीरिक सम्बन्ध रहे थे. उनकी चुदाई मेरे लंड ने कई बार की थी.

ममता जी पहले से ही पढ़ने में तेज थीं, इसलिए पढ़ लिखकर वो अब लेक्चरर बन गयी थीं. वो उसी कॉलेज में पढ़ाती थीं, जिसमें मैंने दाखिला लिया था.

वैसे घर से दूर दिल्ली में रहकर मेरा पढ़ने का बिल्कुल भी दिल नहीं था मगर मेरे लिए जो एक अच्छी बात थी, वो बस ये थी कि उस कॉलेज में ममता जी पढ़ाती थीं ... नहीं तो घर से दूर जाकर पढ़ना मुझे भी अच्छा नहीं लग रहा था.

खैर ... अब कॉलेज में दाखिला तो हो गया था. मगर अब दिल्ली में रहने की दिक्कत थी.

मैं तो सोच रहा था कि मुझे शायद ममता जी के घर पर ही रहना होगा, मगर ममता जी तो खुद ही किराए के घर में रहती थीं और दूसरा उनका घर कॉलेज से काफी दूर भी था. इसलिए मेरे भैया ने मुझे कॉलेज के पास ही एक कमरा किराये पर दिलवा दिया.

वैसे तो उस कॉलेज में हॉस्टल भी था. मगर मेरे भैया का मानना था कि हॉस्टल में रह कर

मैं और बिगड़ जाऊंगा. इसलिए भैया ने मुझे हॉस्टल में नहीं रहने दिया. बल्कि उनके एक दोस्त के रिश्तेदार के घर मुझे एक कमरा किराये पर दिलवा दिया.

बाकी रहा खाना, सो खाने के लिए उन्होंने एक होटल में प्रबंध करवा दिया था. वो होटल नौकरी पेशा वाले लोगों के लिए टिफिन बनाता था.

अब मेरे पास कोई बहाना तो था नहीं, इसलिए मैं भी अपना सामान लेकर दिल्ली पहुंच गया.

वैसे जो कमरा मुझे किराये पर मिला था, उसमें एक छोटा बेड, अलमारी और छोटा-मोटा सामान पहले से ही था.

पता नहीं वो किसी किरायेदार का छूटा हुआ सामान था ... या मकान मालिक का था. ये तो मुझे नहीं पता, मगर मेरे लिए ये अच्छा हो गया था क्योंकि मुझे घर से ज्यादा सामान लाने की ... या कुछ खरीदने की जरूरत नहीं पड़ी.

अब कमरे की बात चली है, तो कहानी को आगे बढ़ाने से पहले मैं आपको सबसे पहले उस घर के बारे में ही बता देता हूँ, जिस घर में भैया ने मुझे कमरा दिलवाया था.

वो घर तीन मंजिल ... या यूँ कहें कि तीन नहीं, बल्कि अढ़ाई मंजिल का ही था.

अढ़ाई इसलिए ... क्योंकि उस घर में नीचे के दो तल तो पूरे बने हुए थे ... मगर जो तीसरा तल था, वो अधूरा बना था.

अधूरा भी क्या था ... बस उसमें एक कमरा और लैट्रीन बाथरूम ही थे. बाकी पूरी छत खुली थी.

सबसे नीचे के तल पर खुद मकान मालिक का परिवार रहता था. ऊपर के दो तल उन्होंने किराये पर दिए हुए थे.

सबसे ऊपर जो एक कमरा था ... वो मैंने लिया था. बीच का जो तल था, वो पहले से ही किसी अन्य को किराये पर दिया हुआ था.

शायद मकान मालिक ने उस घर को किराये पर ही देने के हिसाब से बनवाया था. क्योंकि उसमें ऊपर जाने के लिए सीढ़ियां घर के अन्दर से नहीं थीं, बल्कि बाहर से बनवाई हुई थीं ... बिल्कुल फ्लैट के जैसे. ताकि किसी भी तल पर रहने वाले को आने-जाने के लिए कोई तकलीफ ना हो.

दिल्ली जैसे बड़े शहरों में अधिकांश लोग अधिक पैसे कमाने के लिए किरायेदार रखते हैं. हमारे मकान मालिक ने भी शायद यही सोचकर वो घर बनवाया था.

इस घर का जो मुख्य दरवाजा था, वो ही सबका सांझा था ... नहीं तो सब कुछ अलग अलग ही था.

खैर ... मेरे लिए वहां सब कुछ नया था और मुझे कमरे में सामान आदि भी सही से लगाना था.

इसलिए मैं पहले दिन ना तो कॉलेज गया और ना ही बाहर किसी से मिला. बस अपने कमरे में ही सामान आदि लगाता रहा.

मगर दूसरे दिन रात को खाना खाने के बाद मैं पास के ही एक किराना स्टोर में चला गया, जिसमें किराना की दुकान के साथ साथ एसटीडी, पीसीओ भी लगा हुआ था.

मैं यहां बता देना चाहता हूँ कि उस समय मोबाईल फोन तो आ गए थे ... मगर बस पैसे वाले लोग ही इस्तेमाल करते थे. बाकी सब लोग एसटीडी, पीसीओ से ही बात करते थे.

मैंने एक तो अपने घर पर बात नहीं की थी ... और दूसरा मुझे अपने रोजाना इस्तेमाल का कुछ सामान भी लेना था, इसलिए मैं उस किराना स्टोर पर चला गया.

एसटीडी, पीसीओ में जाकर मैंने पहले तो अपने घर पर बात की, फिर ऐसे ही अपने एक दोस्त से बात करने लग गया.

मैं अपने जिस दोस्त से बात कर रहा था, वो मेरा सबसे अच्छा दोस्त तो था ही, साथ में वो मेरे जैसा ही कमीना भी था.

इसलिए उससे बात करते करते पता ही नहीं चला कि कब हमारी बातों का विषय चुत लंड पर आ गया.

अपने कमीने दोस्त से फोन पर बात करते समय तो मैंने ध्यान नहीं दिया.

मगर बात करने के बाद जब मैं केबिन से बाहर आया, तो देखा कि एक लड़की उस दुकान में खड़ी हुई थी.

वो मुझे इतनी बुरी तरह से घूर घूरकर देख रही थी, जैसे कि वो मुझे अभी खा जाएगी.

शायद वो काफी देर से उस दुकान में खड़ी हुई थी और उसने मेरी सभी बातें सुन ली थीं. तभी तो वो इतने गुस्से में नजर आ रही थी.

दरअसल उस कॉलोनी में वो एक ही बड़ा किराना स्टोर था, इसलिए वहां के अधिकतर लोग वहीं से सामान खरीदते थे. दिन में तो वहां भीड़ ही रहती है मगर देर रात कोई एकाध ही लोग आते थे.

मैं जिस समय वहां गया था, उस वक्त वहां पर कोई भी नहीं था.

खुद दुकानदार भी एक कोने में बैठकर खाना खा रहा था. इसलिए तो मैं अपने दोस्त से खुलकर बातें करता रहा.

वो लड़की भी शायद कुछ सामान लेने वहां आई थी मगर दुकानदार खाना खा रहा था, इसलिए वो वहां खड़ी हो गयी.

वैसे तो मैं केबिन में अन्दर बैठकर बात कर रहा था मगर गर्मी का मौसम था इसलिए गर्मी के कारण मैंने केबिन का दरवाजा खुला रखा हुआ था.

और मैं अन्दर की तरफ मुँह करके बात कर रहा था, इसलिए मुझे पता ही नहीं चला कि वो लड़की कब उस दुकान में आ गयी और मेरी सभी बातें सुनती रही.

मैं भी तो बेवकूफ ही था, जो बातों में इतना खो गया कि किसी के आने जाने का भी ध्यान नहीं दिया.

ऐसे ही खुलकर सीधा सीधा ही चूचियां मसल दीं ... चुत चाट ली ... लंड घुसा दिया ... चुत फाड़ दी ... चोद दिया ... और भी पता नहीं क्या क्या बकता रहा था.

हालांकि मुझे नहीं पता था कि वो भी वहां पर है ... और मेरी बातें सुन रही है. मगर वो लड़की तो शायद यही सोच रही थी कि मैं ये सब बातें जानबूझकर उसे सुनाने के लिए कर रहा था.

खैर ... तब तक उस दुकानदार ने खाना खा लिया था और वो अब काउन्टर पर आकर खड़ा हो गया था.

मेरी अब उस लड़की के सामने ज्यादा देर तक ठरहने की हिम्मत नहीं थी. इसलिए मैंने अपनी जरूरत वाला सामान नहीं लिया, बस जल्दी से उसे फोन करने के पैसे दिए और चुपचाप वहां से सीधा अपने कमरे पर आ गया.

अब अगले दिन :

मेरा कॉलेज जाने का वो पहला ही दिन था. सुबह होटल से नाश्ता आदि करके मैं कॉलेज जाने के लिए बस स्टॉप पर आया ही था कि मेरा ध्यान वहां पर खड़ी एक बेहद ही खूबसूरत लड़की ने खींच लिया.

क्या खूबसूरत थी वो ... लग रहा था जैसे गुलाब का फूल हो. इतनी हॉट और सेक्सी लड़की भी हो सकती है ... मैंने तो कभी सोचा भी नहीं था. सिर से पैर तक कयामत थी कयामत.

उसका ख़ासा ऊंचा लम्बा कद हो ... या उसकी खूबसूरती, सब मेरा ध्यान खींच रहे थे. उसके बालों का बार बार उसके चेहरे पर आना और एक हाथ से उसका उन्हें संवारना. बस इतना ही कह सकता हूँ कि इससे ज्यादा तारीफ करने को मेरे पास शब्द नहीं हैं. उसकी खूबसूरती की जितनी तारीफ की जाती, उतनी कम थी.

उसका गोरा बदन, झील सी नशीली आंखें, सुर्ख गुलाबी होंठ ... सच में वो कोई अप्सरा लग रही थी.

उसके गोरे चिकने बदन पर वो लाल साड़ी तो इतनी कमाल लग रही थी कि बस पूछो ही मत.

मैं तो उसको देखकर पागल सा ही हो गया था.

वो शादीशुदा थी या फिर कली से फूल बनने का इंतज़ार कर रही थी, ये तो नहीं पता था. मगर उसके गुलाबी होंठ, उसके आंख में लगा हुआ काजल, उसकी अदाएं मुझे तो पहली ही नज़र में सब घायल कर गए थे.

मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि कोई इतनी भी खूबसूरत हो सकती है. जन्नत की अप्सरा लग रही थी वो.

उसको देखकर मेरा मुँह खुला का खुला ही रह गया था.

वो लड़की बेहद सुन्दर तो थी ही, मगर उसमें सबसे ज्यादा आकर्षित करने वाली थी उसकी लम्बाई, जिसने कि मुझे बहुत ज्यादा प्रभावित किया था.

उसको देखकर लग रहा था कि उसकी लम्बाई शायद मुझसे भी ज्यादा थी. क्योंकि वो बस

स्टॉप पर खड़ी सब लड़कियों में तो सबसे लम्बी थी ही.

उसके पास में खड़े लड़कों से भी वो मुझे लम्बी नजर आ रही थी.

अब जैसे ही मैं बस स्टॉप पर आकर खड़ा हुआ, उसने भी मुझे देखा. मगर उसने बस एक बार सामान्य तरीके से ही मुझ पर नजर डाली ... और वो भी शायद इसलिए कि मैं वहां नया था.

इसके बाद वो दूसरी तरफ देखने लगी.

तभी मुझे ध्यान आया कि शायद ये तो वही लड़की थी, जो पिछली रात मुझे किराना स्टोर में मिली थी.

कल रात को तो मैंने डर के कारण उस पर ध्यान नहीं दिया था. मगर वो इतनी भी खूबसूरत होगी यकीन नहीं हो रहा था.

उसने शायद मुझे पहचान लिया था, इसलिए मुझे देखते ही उसके चेहरे के भाव बदल गए थे.

उसने बस एक बार तो मेरी तरफ देखा, फिर गंदा सा मुँह बना कर दूसरी तरफ देखने लगी.

अब उस लड़की ने तो अपना मुँह दूसरी तरफ कर लिया.

मगर उसकी खूबसूरती व लम्बाई से मैं इतना प्रभावित था कि मेरी नजरें तो उस पर से हट ही नहीं रही थीं. मैं अब भी बार बार बस उसे ही देखे जा रहा था. उसने भी अब एक दो बार मेरी तरफ देखा, मगर मुझे अपने आपको इस तरह घूरते देखकर अपना मुँह दूसरी तरफ करके खड़ी हो गयी.

मैं अब कुछ देर तो उसे देखता रहा, फिर मुझसे रहा नहीं गया इसलिए मैं धीरे धीरे करके उसकी बगल में ही जाकर खड़ा हो गया. दरअसल मैं बस ये देखना चाहता था कि सही में

ही वो मुझसे ज्यादा लम्बी है या ये मेरा ही वहम है.

मगर जैसे ही मैं उसके पास जाकर खड़ा हुआ, उसने एक बार तो मेरी तरफ घूरकर देखा, फिर मुँह से कुछ बड़बड़ाते हुए मुझसे थोड़ा सा हटकर खड़ी हो गयी.

उसने बड़बड़ाते हुए मुझे शायद गाली दी थी, जिस पर मैंने बाद में ध्यान दिया.

वो शायद सोच रही थी कि मैं उसे छेड़ रहा हूँ क्योंकि एक तो मैंने कल रात ही गड़बड़ कर दी थी. ऊपर से मैं जब से बस स्टॉप पर आया था, तब से उसे ही देखे जा रहा था.

वैसे वो थी भी इतनी खूबसूरत की कोई एक बार देखे, तो बस उसे देखता ही जाए इसलिए तो मैं भी उस पर फिदा हो गया था.

मुझे तो अब खुद पर गुस्सा आ रहा था कि कल रात मुझे उसी दुकान पर जाना था क्या ... और गया भी, तो ऐसी वैसी बातें क्यों की.

फिर बात ही करनी थी, तो कम से कम देखकर तो करनी थी.

अब तो उससे बात भी नहीं कर सकता.

खैर ... मैं अब दोबारा से उसके पास तो नहीं गया. मगर मेरी नजरें अब भी उसी पर टिकी रहीं.

तब तक बस आ गयी. जिस बस में वो चढ़ी थी, उसी बस से मुझे भी जाना था.

दरअसल वो बस मेरे कॉलेज भी जाती थी इसलिए उसके साथ साथ मैं भी चढ़ गया.

मैं क्या, वहां पर जो चार पांच लड़के-लड़कियां खड़े थे, वो सब भी उसी बस से चढ़ गए.

उस बस में बहुत ज्यादा भीड़ तो नहीं थी मगर बैठने के लिए मुश्किल से एक दो सीट ही खाली थीं, जिनमें से एक सीट पर तो एक दूसरी लड़की बैठ गयी और दूसरी पर वो बैठ

गयी.

मैं उसके पीछे ही था ... इसलिए मैं अब उससे आगे नहीं गया बल्कि उसकी सीट के पास ही खड़ा हो गया.

जिस सीट पर वो बैठी हुई थी, मैं ठीक उसके पास ही खड़ा था ... जिससे मुझे उसके ब्लाउज के गहरे गले में से उसकी चूचियों की गहरी घाटी बिल्कुल स्पष्ट नजर आने लगी थी.

अब ऐसा नजारा मिले तो भला कौन छोड़ता है.

मैं भी उसकी दूधिया सफेद गहरी घाटी को आंखें फाड़ फाड़कर देखने लगा.

मगर कुछ देर बाद ही उसने मेरी नजरों को ताड़ लिया.

वो समझ गयी थी कि मैं उसके ब्लाउज में से दिखाई देती उसकी चूचियों को घूर रहा हूँ इसलिए तुरन्त ही उसने अपनी साड़ी के पल्लू को सही से करके अपनी चूचियों को छुपा लिया और एक बार फिर मुँह से कुछ बड़बड़ाते हुए शायद मुझे गाली दी.

उसके ऐसा करने से मैं भी थोड़ा हड़बड़ा गया था, इसलिए मैंने तुरन्त अपना मुँह दूसरी तरफ कर लिया और बाहर खिड़की की ओर देखने लगा.

मैंने अपना मुँह तो दूसरी तरफ कर लिया मगर फिर भी कभी कभी चोरी से उसकी ओर भी देख ले रहा था. जिसको शायद वो भी अच्छे से समझ रही थी मगर अब कुछ कह नहीं पा रही थी.

दोस्तो, मेरी ये सेक्स कहानी आपको कई भागों में आनन्दित करेगी. इसमें प्रेम अधिक है और सेक्स कम है. मगर जितना भी है, वो आपको सेक्स कहानी का पूरा मजा देगा.

आप मुझे मेल करना न भूलिएगा.

chutpharr@gmail.com

कहानी जारी है.

Other stories you may be interested in

शिमला में लंड की तलाश- 1

मेरी हॉट इंडियन चुत को नए नए लंड की जरूरत थी. मुझे बस चुदने का बहाना चाहिए. सामने कोई भी क्यों न हो, बस मर्द होना चाहिए जो मुझे रगड़ कर रख दे. लेखक की पिछली कहानी थी मैं बनी [...]

[Full Story >>>](#)

मेरा प्रथम समलैंगिक सेक्स- 4

मेरी सहेली ने मुझे अपने जाल में फांस कर मेरे साथ लेस्बियन, डिल्डो सेक्स करना शुरू कर दिया. मुझे भी अब इस खेल में आनन्द आ रहा था. ये तो अभी शुरूआत थी. हैलो फ्रेंड्स, मैं सारिका कंवल आपको महिलाओं [...]

[Full Story >>>](#)

मेरा प्रथम समलैंगिक सेक्स- 3

फीमेल फीमेल सेक्स पसंद करने वाली मेरी एक सहेली मेरे ही घर में मुझे समलैंगिक सेक्स के लिए उकसा रही थी. मुझे इस तरह के सेक्स में कोई रुचि ना थी. नमस्कार दोस्तो, मैं सारिका कंवल फिर से अपनी फीमेल [...]

[Full Story >>>](#)

मेरी कुंवारी बुर की सील डाक्टर ने तोड़ी- 2

देशी चुदाई की कहानी में पढ़ें कि मैं चूची में दर्द के इलाज के लिए डॉक्टर के पास गयी तो उस हरामी डॉक्टर ने कैसे मेरी वासना को जगा कर मेरी चूत की सील तोड़ दी. मेरी देशी चुदाई की [...]

[Full Story >>>](#)

गर्लफ्रेंड की सहेलियों संग रासलीला- 6

नंगी चुदाई कहानी में पढ़ें कि कैसे मेरी गर्लफ्रेंड की सहेली अपनी चुदाई के लिए मारी जा रही थी. मैंने उसकी तमन्ना कैसे पूरी की ? मजा लें ! मित्रो, मैं विवान अपनी सेक्स कहानी में चुदाई का रंग भरने एक बार [...]

[Full Story >>>](#)

